विचार बिन्दु

संग्रहालय हमारे जीवन का मूल है, जो हमें गति प्रदान करता है। -अज्ञात

ज़रूरत बहुत सारे संग्रहालयों की है!

जब हम देश से बाहर जाते हैं और वहां कुछ भी अच्छा देखते हैं तो हमारे मन में पहला विचार यही आता है कि ऐसा हमारे देश में क्यों नहीं है, या ऐसा हमारे देश में कैसे हो सकता है! और इसी तरह जब हम अपने शहर से बाहर किसी और शहर में जाते हैं और वहां कुछ अच्छा देखते हैं तो अपने शहर में भी वैसा ही होने का सपना देखने लगते हैं। यह बहुत स्वाभाविक प्रतिक्रिया है और मैं कह सकता हूं कि हरेक की ऐसी ही प्रतिक्रिया होती है। अपनी विदेश यात्राओं में मैंने बार-बार ऐसा महसूस किया है और कालांतर में जब अपने देश में उन चीज़ों या सुविधाओं को साकार देखा है तो मन खुशी से भर गया है। इधर पारिवारिक कारणों से हमारा कर्नाटक की राजधानी बेंगलुरु आना बढ़ गया है और यहां की बहुत सारी चीज़ों को देखकर मैं वैसी ही चीज़ों की अपने शहर में होने की भी कल्पना और कामना करने लगता हूं। वैसे हर जगह कुछ ऐसा होता है जिसकी आप कामना करते हैं और कुछ ऐसा भी होता है जिसके लिए आप यह कामना करते हैं कि वैसा आपके यहां कभी भी न हो। आज मैं बेंगलुरु की एक ऐसी बात की चर्चा करना चाह रहा हूं जिसका अपने शहर में होने का सपना मैं देखता हूं।

लगभग दो बरस पहले जब यहां आया था तो अनायास ही मैं यहां एक अद्भुत संग्रहालय में चला गया था. संग्रहालय था - इण्डियन म्यूज़िक एक्सपीरिएंस म्यूज़ियम। हिंदी में कहूं तो भारतीय संगीत अनुभव संग्रहालय। वैसे तो बरसों पहले अपनी सिएटल (अमरीका) यात्रा के दौरान इसी तरह का और इससे बहुत ज़्यादा बड़ा एक संग्रहालय देखा था - ईएमपी (EMP) अर्थात एक्सपीरिएंस म्यूज़िक प्रोजेक्ट। (अब इसका नाम बदल कर म्यूज़ियम ऑफ पॉप कल्चर कर दिया गया है)। जीवन में पहली दफा एक ऐसा संग्रहालय देखा तो चमत्कृत होना स्वाभाविक ही था, लेकिन क्योंकि यह संग्रहालय पूरी तरह पाश्चात्य संगीत पर केंद्रित था, इसे देखकर अपने यहां ऐसा ही कुछ हो- यह विचार मन में नहीं आया था। लेकिन जब दो बरस पहले बेंगलुरु में यह संग्रहालय देखा तो मैं न केवल चमत्कृत हुआ, थोड़ा उदास भी हुआ कि ऐसा ही संग्रहालय मेरे अपने शहर में क्यों नहीं है! जहां तक सांगीतिक विरासत की बात है, हम भला किससे उन्नीस हैं? हमारा लोक संगीत कितना समृद्ध है! शास्त्रीय संगीत में भी हमारे घराने अत्यधिक महत्वपूर्ण हैं। चाहे बात कथक की हो या खयाल गायकी की, जयपुर की धाक हर जगह है। हमारे तो कण-कण में संगीत व्याप्त है, फिर ऐसा संग्रहालय हमारे यहां क्यों नहीं है?

यह विचार मन में चल ही रहा था कि इस बार की बेंगलुरु यात्रा में फिर एक और संग्रहालय देखने का संयोग अचानक ही बन गया। इस बार जो संग्रहालय देखा उसका नाम है एमएपी (MAP) अर्थात म्यूज़ियम ऑफ आर्ट एण्ड फ़ोटोग्राफ़ी। शहर के बीचों बीच एक छह मंज़िला सुरुचिपूर्ण इमारत में अवस्थित इस संग्रहालय में दसवीं शताब्दी से लगाकर आज तक की पेण्टिंग्स, स्थापत्य, टेक्स्टाइल्स, छायाचित्रों और लोकप्रिय संस्कृति के विविध रूपों का अत्यंत समृद्ध और आकर्षक संग्रह है और यह संग्रह लगातार बढ़ता जा रहा है। इस संग्रहालय में कला दीर्घाएं, चित्र वीथियां, डिजिटल अनुभव केंद्र, पुस्तकालय, उपहार केंद्र, जलपान गृह आदि सब कुछ है और यहां का बहुत विनम्र और कुशल स्टाफ़ आपके लिए हर संभव सहायता प्रदान करने को तत्पर रहता है। इस बार मैंने यहां तीन अलग-अलग मंज़िलों पर तीन अलग-अलग प्रदर्शनियां देखीं। एक तल पर कृष्णा रेड्डी की कला की 'राइमअनब्रोकन' शीर्षक प्रदर्शनी थी तो दूसरे तल पर जेराम पटेल और तारिक करीमभाय की 'पेंटिंग विद फायर' थी। तीसरे तल पर स्त्री के जीवन के विविध आयामों को समेटने वाली शानदार प्रदर्शनी 'विज़िबल/इनविज़िबल' थी। संग्रहालय में प्रवेश करते हुए चंडीगढ़ रॉक गार्डन के लिए बहु प्रशंसित नेकचंद सैनी की कला के कुछ नमूने मुग्ध कर देते है। बहुत तसल्ली से तो नहीं देखा, फिर भी इस संग्रहालय में कोई चार घण्टे बिताए और लौटते हुए स्वयं को कलात्मक रूप से समृद्ध महसूस किया। इस संग्रहालय में यह उपलब्धि भरा समय बिताने से लगभग एक सप्ताह पहले इसी शहर में नेशनल गैलेरी ऑफ मॉडर्न आर्ट में कला आचार्य नंद लाल बसु के ख़ास चित्रों की एक शानदार प्रदर्शनी 'हरिपुरा पैनल्स' देखने का सौभाग्य मिला। दर असल इस बेंगलुरु शहर में एक पूरी सड़क पर संग्रहालय ही संग्रहालय हैं। मैंने पड़ताल की तो पाया कि यहां संग्रहालयों की जैसे एक शृंखला ही बना दी गई है। कुछ नाम देखें:- विश्वेश्वरैया औद्योगिक एवं तकनीकी संग्रहालय, द हेरिटेज सेंटर एण्ड एयरोस्पेस म्यूज़ियम, कर्नाटक चित्रकला परिषद, जवाहर लाल नेहरु प्लेनिटेरियम, क्यूरियस सिटी साइंस सेंटर, किंकिणी आर्ट, वेंकटप्पा आर्ट गैलेरीएंड गवर्नमेंट म्यूज़ियम, इंडियन कार्टून गैलेरी, बेर्नम्यूज़ियम, नेशनल मिलिट्री मेमोरियल, बैंगलोर क्रिएटिव सर्कस, द परम साइंस एक्सपरिमेण्ट सेंटर, रंगोली मेट्रो आर्ट सेंटर, स्वस्ति कंटेंपरेरी आर्ट गैलेरी, संदेश-म्यूज़ियम ऑफ कम्यूनिकेशन। यह पूरी सूची नहीं है। और भी अनेक संग्रहालय और वीथियां यहां हैं। ये सब सरकार द्वारा संचालित नहीं हैं।

बहुत सारे संग्रहालयों को देख चुकने के बाद मेरी यह राय बनी है कि ये शिक्षा के बेहतरीन साधन हैं. एक संग्रहालय में जाकर आप जितना जानते और सीखते हैं उतना औपचारिक शिक्षा संस्थानों में शायद नहीं सीख सकते हैं. इसलिए इनकी उपादेयता असंदिग्ध है. यहीं संग्रहालयों की एक सर्वमान्य परिभाषा को याद कर लेना उपयुक्त होगा। इस परिभाषा से संग्रहालयों की प्रवृत्तियों और उनके अवदान का अनुमान लगाया जा सकता है।

बहुत सारे संग्रहालयों को देख चुकने के बाद मेरी यह राय बनी है कि ये शिक्षा के बेहतरीन साधन हैं। एक संग्रहालय में जाकर आप जितना जानते और सीखते हैं उतना औपचारिक शिक्षा संस्थानों में शायद नहीं सीख सकते हैं, इसलिए इनकी उपादेयता असंदिग्ध है। यहीं संग्रहालयों की एक सर्वमान्य परिभाषा को याद कर लेना उपयुक्त होगा। इस परिभाषा से संग्रहालयों की प्रवृत्तियों और उनके अवदान का अनुमान लगाया जा सकता है। परिभाषा यह है:- "संग्रहालय समाज की सेवा करने वाले ऐसे अलाभकारी स्थायी संस्थान है जो मूर्त्त एवं अमूर्त विरासत का शोध, संग्रहण, संरक्षण, व्याख्या और प्रदर्शन करते हैं। संग्रहालय आम जन के लिए खुले रहकर, समावेशी और सुलभ रहते हुए विविधता और संधारणीयता का पोषण करते हैं। संग्रहालयों का परिचालन और संप्रेषण नैतिक, पेशेवराना तरह से और समुदायों की सहभागिता से होता है और ये शिक्षा, मनोरंजन, चिंतन और ज्ञान के सहभाजन के लिए विविध प्रकार के अनुभव प्रदान करते हैं." विदेशों में मैंने देखा है कि शैक्षणिक संस्थान अपने बहुत छोटे विद्यार्थियों को भी ऐसे संग्रहालयों में ले जाते हैं, हमारे यहां प्राय: ऐसा नहीं होता।

यह सारी चर्चा मैंने अपने राज्य और विशेष रूप से राज्य की राजधानी जयपुर के संदर्भ में की है। हमारे पास संग्रहणीय, संरक्षणीय और प्रदर्शनीय इतना कुछ है लेकिन हम उसके प्रति पूरी तरह उदासीन हैं। याद करने की कोशिश करें कि हमारे राज्य में कितने संग्रहालय हैं, और उनमें से कितनों को हमने देखा है! बेशक राज्य में बहुत सारे राजकीय संग्रहालय हैं, लेकिन क्योंकि वे राजकीय हैं, उनका काम करने का तौर तरीका वैसा ही है जैसा राजकीय उपक्रमों का होता है. इसका एक अपवाद है राजस्थान की राजधानी जयपुर में स्थित अल्बर्ट हॉल राजकीय संग्रहालय, जो न केवल अपने संग्रह के लिए उल्लेखनीय है, अपनी व्यवस्थाओं के लिए भी सराहनीय है। एकअन्य संग्रहालय जिसकी मैं सराहना करना चाहता हूं वह है उदयपुर में स्थित भारतीय लोक कला मण्डल का संग्रहालय। निश्चय ही प्रांत में अन्य कुछ बेहतरीन संग्रहालय भी होंगे जिनका उल्लेख मैं अपनी अल्प जानकारी के कारण नहीं कर पा रहा हूं, लेकिन इसके बावजूद यह एक तथ्य है कि अभी हमारे यहां बहुत सारे संग्रहालयों की ज़रूरत और सम्भावनाएं हैं। जयपुर में ही संगीत और लोक कलाओं का एक संग्रहालय होना चाहिए, एक संग्रहालय राजस्थान की सांगीतिक विरासत का होना चाहिए, साहित्यिक वैभव का भी एक संग्रहालय होना चाहिए, हमारे खान-पान की परंपराओं और उनके वैभव का भी एक संग्रहालय हो, वेश विन्यास, ऐतिहासिक विरासत, भाषा-बोलियां, ये सब संग्रहालयों के विषय हैं और इन पर गंभीरता से काम होना चाहिए। बहुत सारे लोगों के निजी संग्रह हैं। स्वर्गीय विजय वर्मा जी के पास लोक वैभव और संगीत का अद्भुत संग्रह था। उनके परिजनों के लिए भी यह हर्ष और गौरव की बात होगी कि उनका संग्रह आम जन के लिए सुलभ हो। ऐसे अन्य बहुत सारे संग्राहक हमारे यहां रहे हैं। उनके संग्रह अगर संग्रहित और व्यवस्थित किए जाकर आम जन के लिए सुलभ कराए जाएं तो यह बहुत उपयोगी काम होगा। उन पर स्वामित्व भले ही मूल संग्राहक के परिजनों का रहे, सरकार अथवा निजी क्षेत्र उनका बेहतर प्रबंधन कर उनकी उपादेयता को कई गुना बढ़ा सकता है।

ज़रूरी नहीं कि यह सारा काम सरकार ही करे। सरकार से हटकर निजी क्षेत्र भी इन संग्राहालयों की स्थापना का ज़रूरी काम कर सकते हैं। दुनिया भर में ऐसा होता है। बेंगलुरु के जिस संग्रहालय के ज़िक्र से मैंने अपनी बात शुरु की है वह भी निजी क्षेत्र द्वारा ही निर्मित और प्रबंधित है और बहुत अच्छी तरह प्रबंधित है। लेकिन इसके लिए पहल राज्य सरकार कर सकती है। वह योजना बनाकर उसकी क्रियान्विति के लिए निजी क्षेत्र का सहयोग मांग सकती है। इस बात की बहुत बड़ी ज़रूरत है कि जयपुर में भी, जो पूरी दुनिया से पर्यटकों को आकर्षित करता है, एक पूरा क्षेत्र केवल संग्रहालयों को समर्पित हो और वहां अनेक विशिष्ट संग्रहालय बनें। जयपुर में, और राज्य के अन्य अनेक नगरों में भी काफी कुछ नया और अच्छा हो रहा है। इस सूची में संग्रहालयों को भी जोड़ा जाना चाहिए। (बेंगलुरु प्रवास से)

-अतिथि संपादक,
डॉ. दुर्गाप्रसाद अग्रवाल
(शिक्षाविद और साहित्यकार)

उच्च शिक्षा - दशा एवं दिशा

प्रो. अशोक कुमार

राष्ट्रीय पुनर्निर्माण के लक्ष्य की प्राप्ति में शिक्षा की महत्वपूर्ण भूमिका है। कहते हैं यदि जीवन में शिक्षक न हों, तो शिक्षा संभव नहीं है। शिक्षक ही वह पथ प्रदर्शक होता है, जो हमें किताबी ज्ञान ही नहीं बल्कि जीवन जीने की कला सिखाता है। शिक्षक ज्ञान प्रदाता होता है, उसकी शिक्षाएँ समाज के लिए अनुकरणीय होती हैं। सवाल यह है कि हम समाज की नींव रखने वाले इस व्यक्तित्व (अध्यापक) की नींव को यदि कमजोर करेंगे तो नि:संदेह यह हमारे देश और समाज के लिए घातक सिद्ध होगा।

पूरे विश्व में जो शैक्षणिक व्यवस्था है, उसके तीन घटक हैं- छात्र, अध्यापक और अभिभावक। इन तीनों के समन्वय के बगैर शैक्षणिक त्रिभुज के निर्माण की परिकल्पना ही बेमानी है। शिक्षा के बगैर विकसित मानव की कल्पना नहीं की जा सकती और इसके बिना सभ्य एवं शिक्षित समाज की भी कल्पना नहीं की जा सकती। जीवन की आधारभूत जरुरतों- रोटी, कपड़ा और मकान के बाद मानव को मानव कहलाने की जिस चीज की जरुरत शायद सबसे ज्यादा होती है वह है शिक्षा। यह शिक्षा ही है, जिसकी मदद से हम किताबी आदर्शों का तारतम्य जीवन की सच्चाइयों से स्थापित कर पाते हैं। विचारों को एक रचनात्मक केन्द्र देते हैं, सही-गलत में भेद कर पाते हैं और सबसे अधिक राष्ट्र निर्माण की प्रक्रिया में अपना योगदान दे पाते हैं। बालक का बचपन एक कोरे कागज के समान होता है। शिक्षकों के द्वारा शिक्षा के माध्यम से शुरूआत के वर्षों में दिये गये संस्कार एवं गुण उनके सम्पूर्ण जीवन को सुन्दर बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका अदा करते हैं! परन्तु प्राथमिक शिक्षा व्यवस्था का सच भी जगजाहिर है।

जॉन एडम्स ने कहा है कि "अध्यापक ही व्यक्ति, समाज, राष्ट्र एवं विश्व का निर्माणक एवं विकास का प्रमुख आधार है। बिना शिक्षक की सक्रिय सहभागिता के किसी राष्ट्र का वर्तमान एवं भविष्य का निर्माण एवं विकास सम्भव नहीं है।" इसी बात को भारतीय मनीषियों ने, "**गरुरू ब्रह्मा, गुरु रू विष्णु, गुरु रू देवो महेश्वर:**" के रूप में कहा। यह परम्परा एवं अध्यापक के प्रति सम्मान सनातन से चल आ रहा है, किन्तु जब अध्यापक की दशा एवं दिशा को वर्तमान परिप्रेक्ष में देखने का प्रयास करता हूँ तो उसका स्वरूप परिवर्तित दिखायी पड़ता है, जिसमें विगत दशक शिक्षक समाज के लिए बहुत ही असन्तोषजनक रहा उसमें अध्यापक शिक्षा के गुणवत्ता पर एक प्रकार से प्रश्नचिन्ह लगता दिखायी पड़ता है।

जब पूरी दुनिया ने विद्यालय की कल्पना नहीं की थी, उस समय हमारे यहाँ विश्वविद्यालय हुआ करते थे। विश्वस्तरीय नालंदा विश्वविद्यालय, तक्षशिला विश्वविद्यालय और विक्रमशिला विश्वविद्यालय इसके उदाहरण हैं। पर शिक्षा-व्यवस्था की विसंगतियाँ कहीं-न-कहीं बहुत कचोटती हैं। शिक्षा में जब सियासत की गैरजरूरी दखलंदाजी बढ़ती है, तो बेवजह शिक्षा जगत को शर्मसार होना पड़ता है। इतना ही नहीं, जब राज्यों में सरकारें बदलती हैं, तो विभिन्न पार्टियाँ अपने एजेंडे के अनुसार विभिन्न पाठ्यक्रम भी बदलते हैं! किसी भी राज्य में जब एक खास दल की सरकार आती है, तो वहाँ इतिहास के पाठ्यक्रम में दो पन्ने जोड़ दिये जाते हैं और जब दूसरी पार्टी सत्ता संभालती है, तो उन दो पृष्ठों को फाड़कर हटा दिया जाता है। यह हमारे ऐतिहासिक तथ्यों के प्रस्तुतीकरण का दुर्भाग्यपूर्ण मौजूदा सच है। संपूर्ण शिक्षा व्यवस्था में राजनीति प्रवेश कर चुकी है और जबसे शिक्षा व्यवस्था में राजनीति का अनुचित प्रवेश हुआ, तब से शिक्षा व्यवस्था पैसे कमाने का धंधा बन चुकी है। नीति नियामक संस्थाओं की नीतियों एवं कार्यस्वरूप के बीच एक भारी अन्तर दिखायी पड़ रहा है! उच्च शिक्षा की स्थिति बेहतर बनाने के लिए विश्वविद्यालय अनुदान आयोग का गठन हुआ तो जरूर, पर आज विश्वविद्यालय जैसी स्वायत्त संस्था की विश्वसनीयता संदेहास्पद होती चली जा रही है। कुछ वर्ष पूर्व अमेरिकी तर्ज पर दिल्ली वि.वि. में चार साल के स्नातक पाठ्यक्रम की शुरुआत हुई, जिसकी चौतरफा आलोचनाएँ हुयीं! और आज एक बार फिर चार साल के स्नातक पाठ्यक्रम शुरू कर दी गई है! जिनके पास नीति बनाने की निपुणता नहीं है वे ही देश की नीति बना रहे हैं और जो शिक्षण संस्थाओं में एक भी पाठ नहीं पढ़ाये हैं वे पाठ्यक्रम निर्धारित करते हैं! यह हमारे शिक्षा व्यवस्था का सबसे बड़ा दुर्भाग्य है।

समूचे देश के अंदर छात्र - शिक्षक अनुपात इतना असंतुलित है कि सोचकर ही स्थिति भयावह लगती है आई.आई.टी. जैसे संस्थानों में 15-20 शिक्षकों की कमी है। आज देश का सम्पूर्ण शिक्षा क्षेत्र योग्य अध्यापकों की कमी से जूझ रहा है! विकसित देश में शिक्षा का भविष्य अस्थायी शिक्षकों के सहारे पर निर्भर है जिनको विभिन्न नाम से जाना जाता है : अस्थायी, एडहॉक, संविदा, पार्टटाइमर, अतिथि, मानद, विजिटिंग, आवश्यकता आधारित, एमओयू प्रोफेसर, शोध विद्वान, ऑनलाइन अतिथि संकाय, स्व अध्ययन। विदेश में: प्रतिस्थापन, सत्रीय, सहायक शिक्षक। ज्ञान आयोग की एक रिपोर्ट के अनुसार यदि देश को 'नालिज सोसाइटी' में बदलना है तो आने वाले सालों में देश में करीब 1500 विश्वविद्यालय खालने होंगे। शिक्षा का विकास सिर्फ कॉलेज खोलने से नहीं होता! कई राज्य स्तरीय विश्वविद्यालय तो ऐसे हैं, जहाँ कई कॉलेजों में कई विभागों में एक भी शिक्षक नहीं है इससे बड़ी विडम्बना और क्या होगी कि प्रदेश के बहुत से शिक्षक ऐसे हैं जो कई महाविद्यालयों में अनुमोदन करायें हैं और वास्तव में कहीं पढ़ा रहे हैं या नहीं यह भी स्पष्ट नहीं है ऐसी शिक्षा व्यवस्था से यह देश को गंभीर खतरे की ओर जा रहा है।

वर्तमान में शिक्षा को सेवा की जगह व्यापार की कोटि में रखा जा रहा है! आज बाजार की मांग के अनुरूप पाठ्यक्रम और पूंजीपतियों के अत्यधिक व्यवसायिक लाभ के लिए महाविद्यालयों एवं तकनीकी संस्थाओं की मान्यता दी जा रही है। निजी कॉलेज क्यों तेजी से बढ़ रहे हैं, क्योंकि उन्हें तेजी से बढ़ने दिया गया है। ऐसे अधिकांश संस्थान वास्तव में शैक्षणिक संस्थानों की आड़ में रियल एस्टेट रैकेट हैं। उनमें से अधिकांश राजनेताओं और बिल्डरों द्वारा नियंत्रित हैं। किसी बड़े शहर में विश्वविद्यालय स्थापित करने के लिए भूमि की आवश्यकता नए खिलाड़ियों के लिए एक बड़ी बाधा की तरह लगती है, जिनके पास बहुत अधिक धन या राजनीतिक संबंध नहीं होते। यह निजी शिक्षा क्षेत्र पर पर्याप्त संसाधनों वाले व्यक्तियों, अक्सर राजनेताओं द्वारा एकाधिकार करने में योगदान देता है। भूमंडलीकरण के इस दौर में हम अपनी ही पहचान खोते जा रहे हैं शिक्षण संस्थाओं में भौतिक संसाधन एक प्रकार से औपचारिकता तथा निरीक्षण की वस्तु बनकर रह गयी है शिक्षक अपने को मानदेय पर काम करने वाले एक श्रमिक के रूप में देख रहा है, जिसमें कुण्ठा, निराशा एवं हताशा का होना स्वाभाविक है! गुरु-शिष्य संबंध का घनत्व घट रहा है। आज शिक्षा पर सकल घरेलू उत्पाद का जितना प्रतिशत खर्च होना चाहिए, वो नहीं हो पा रहा है। रक्षा और अन्य मंत्रालयों का बजट लम्बा-चौड़ा होता है, पर शिक्षा की अनदेखी होती है। समय पर प्राध्यापकों को वेतन नहीं मिलता, फलत: हड़ताली संस्कृति विकसित होती चली जा रही है, जिसका खामियाजा अन्तत: छात्रों को भुगतना पड़ता है। अब बदलती व्यवस्था के परिप्रेक्ष्य में हमारी नैतिकतापूर्ण, गुणवत्तापूर्ण व व्यक्तित्व-निर्माण केंद्रित शिक्षा-पद्धित कहाँ तक अपनी अस्मिता को अक्षुण्ण बनाये रखने में समर्थ होगी, यह गंभीर विचारणीय प्रश्न है।

शिक्षा संस्थानों में अनुसंधान और उसकी गुणवत्ता पर ध्यान नहीं दिया जाता। वाकई एक अच्छा शोध ऐसे परिवेश की माँग करता है, जहाँ शिक्षकों का स्तर अनुसंधान और अन्वेषण को ईमानदार सोच के साथ बढ़ावा देने वाला हो, छात्र निरंतर विषय को आगे बढ़ाने, उसका विस्तार करने और ज्ञान-विज्ञान के क्षेत्र में नये आयाम जोड़ने के प्रयास में लगे हों और नीति-नियंताओं की नीयत साफ हो। शोध के लिए जरूरी इस अन्वेषणपरक बुनियादी प्रवृत्ति का अभाव-सा नजर आता है।

आज भारतीय शिक्षा में शिक्षकों के हालात, विशेष तौर पर सेल्फ फाइनेंस संस्थानों में शिक्षकों की स्थिति काफी दयनीय है, इतने खराब हैं कि व्यवसायिक दृष्टि रखने वाले शिक्षण संस्थायें अपनी जिम्मेदारियां और उत्तरदायित्व से विमुख होते जा रहे हैं। इसके लिए समाज, सरकार, शिक्षा जगत् और शिक्षण संस्था के संचालक खुद भी जिम्मेदार है। शिक्षा व्यवस्था के व्यावसायिक रूप से अध्यापकों का शारीरिक, मानसिक और आर्थिक शोषण भी हो रहा है, अत: वे अपनी सेवा ठीक ढंग से निभाने में अक्षम रहता है। यह स्थिति भारत देश के भविष्य के लिए कतई अच्छी नहीं है और ऐसे ही रहा तो बच्चों का भावी भविष्य अराजकता की ओर जाना तय है। इन सबके लिए सरकार और नई शिक्षा नीतियां जिम्मेदार मानी जा सकती है! अत: देश की सरकारों को हर स्तर पर शिक्षा की दशा एवं दिशा पर गंभीरता से मंथन करते हुए शिक्षा के बाजारीकरण को रोकना होगा तथा ऐसी शिक्षा नीति एवं व्यवस्था देनी होगी जिससे देश और समाज के युवा पीढ़ी अच्छे, कुशल और जिम्मेदार नागरिक बन सकें।

प्रो. अशोक कुमार,
पूर्व कुलपति कानपुर, गोरखपुर विश्वविद्यालय, विभागाध्यक्ष राजस्थान विश्वविद्यालय

स्मॉग से 75 प्रतिशत तक कम हुई विजिबिलिटी

श्रीगंगानगर। हवा में स्मॉग के असर से रविवार को विजिबिलिटी 75 प्रतिशत तक कम रही। इससे अल सुबह सड़कों पर निकले लोगों को परेशानी हुई।दोपहर बाद तीन बजे तक भी हालात ऐसे ही बने रहे। हालांकि यह कोहरे से कुछ अलग था लेकिन हवा में ठहरे डस्ट पार्टिकल और पराली का धुआं विजिबिलिटी पर असर डाल रहा था। ज्यादा परेशानी अल सुबह शहर से बाहर की तरफ निकले लोगों को हुई। दूध

- **दिन भर रहा वातावरण में धुएं जैसा एहसास, अल सुबह ज्यादा परेशान हुए लोग**

विक्रेता सतपाल बिश्नोई ने बताया कि वह करीब 45 किलोमीटर बाइक चलाकर श्रीगंगानगर पहुंचा। उसे विजिबिलिटी कम होने से समान्य दिनों से तीस से चालीस मिनट का अतिरिक्त समय लगा। मौसम एक्सपर्ट बताते हैं कि इन दिनों हवा में कुछ नमी है। इसके साथ ही पड़ोसी राज्य पंजाब में चावल के अवशेष यानी पराली जलाई जा रही है। नमी के कारण पैदा हुआ यह कोहरा और इसके साथ धुआं मिलकर विजिबिलिटी कम करते हैं। फोग और स्मोक से मिलकर पैदा हुए हालात को स्मॉग नाम दिया गया है। स्मॉग से विजिबिलिटी पर 75 प्रतिशत तक असर पड़ा है। एक्सपर्ट्स के अनुसार करीब दस दिन तक ऐसे ही हालात रहेंगे। अगर इस दौरान तेज हवा चले या हलकी बरसात हो तो यह स्मॉग कम हो सकता है उसके बाद केवल कोहरे के हालात रहेंगे। मौसम विज्ञान केंद्र के रिटायर्ड इंचार्ज एमएल रणवां बताते हैं कि डस्ट पार्टिकल और चावल के कचरे को जलाने से पैदा हुआ पराली का धुआं इन दिनों नमी के कारण हवा में अटका है। इससे विजिबिलिटी घटी है। इसी से स्मॉग बढ़ा है।

30 किमी. गरोठ जाकर नेत्रदान लिया

कोटा, (निसं)। सुबह, कॉलेज रोड, गरोठ, मध्यप्रदेश निवासी, सेवानिवृत शिक्षक रामगोपाल तिवारी का आकस्मिक निधन हुआ, जीवनभर विद्यार्थियों को ज्ञान की रोशनी देने के बाद शिक्षक रामगोपाल तिवारी मरणोपरांत भी दो लोगों को ज्योति की रोशनी दे गए। भारत विकास परिषद के प्रांतीय 'भारत को जानो' प्रतियोगिता प्रभारी प्रभारी नरेंद्र कुमार चौधरी ने बताया कि, सेवानिवृत शिक्षक रामगोपाल तिवारी के आकस्मिक निधन के पश्चात उन्होंने पुत्र मुकेश तिवारी से नेत्रदान की चर्चा की, शिक्षित परिवार होने के कारण तुरंत नेत्रदान के प्रति सहमति हो गयी। परंतु एक समस्या थी कि, नेत्र उत्सर्जन करने वाले शामगढ़ के टेक्नीशियन छुट्टी पर थे, ऐसे में नेत्र उत्सर्जन का कार्य कैसे संभव हो?

पुष्कर मेला परवान पर : पूरब-पश्चिम की संस्कृति का हो रहा संगम

पुष्कर मेले में काफी संख्या में देशी व विदेशी पर्यटकों का आना जारी है।

पुष्कर 10 नवंबर। पुष्कर के सालाना मेले में राजस्थान सहित देश के विभिन्न राज्यों से श्रद्धालु पहुंच रहे हैं वहीं सात समुन्दर पार से विदेशी मेहमानों के आने से ब्रह्माजी की पावन नगरी पूर्व पश्चिम संस्कृति की स्थली में तब्दील हो गई हैं। सैलानियों को मेले में आ रहे ठामीण महिला पुरुष श्रद्धालुओं के साथ ऊंट व घोड़े घोडियों करतब लुभा रहे हैं। पशुओं की मंडी में पशुपालक खरीद फरोख्त में मशगूल है।

संतो का डेरा जमने लगा

पुष्कर सरोवर में बैकुंठ चतुर्दशी को शाही स्नान करने व आध्यात्मिक पद यात्रा में भाग लेने के लिए विभिन्न अखाड़ों के संत महात्माओं ने पुष्कर में डेरा जमाना शुरू कर दिया हैं। देश के विभिन्न क्षेत्रों के आश्रमों मठों मंदिरों से मंडलेश्वर महंत मठाधीश व अखाड़ों के संत महात्मा 12 नवंबर को आध्यात्मिक पद यात्रा में शिरकत करेंगे व 14 नवंबर को पवित्र सरोवर में शाही स्नान कर पुण्य कमाएंगे। सरोवर में धार्मिक स्नान कर पुण्य कमाने के लिए श्रद्धालुओं की आवक बढ ने लगी हैं हजारों श्रद्धालु प्रतिदिन सरोवर में स्नान कर ब्रह्मा मंदिर में दर्शन कर पुण्य कमा रहे हैं। चार दिवसीय पंचतीर्थ स्नान के साथ ओर अधिक बढ़ेगी।

23 करोड़ का भैसा:

पुष्कर मेले में भैंसे, घोड़े व पुंगनूर प्रजाति की गाय आकर्षण का केंद्र बने हुए हैं। माथे पर लाल रिबन लगे इस भैंसे का नाम अनमोल है। यह अपने नाम के अनुरूप ही मालिक पलविंदर के लिए अनमोल बना हुआ है। हरियाणा के सिरसा के रहने वाले पलविंदर का दावा है कि उनके भैंसे की कीमत 23 करोड़ लग चुकी है, लेकिन उन्होंने ऊंची कीमत मिलने पर भी इसे बेचा नहीं। अनमोलए पलविंदर के परिवार के लिए अहम सदस्य की भूमिका में है। भाई की तरह है।

- **साधु संतों की आध्यात्मिक यात्रा 12 को**
- **आकर्षण का केंद्र 23 करोड़ का भैसा व 2 करोड़ का घोड़ा**

2 करोड़ का घोड़ा भी आकर्षण का केन्द्र:

पुष्कर मेले में एक घोड़ा सभी के आकर्षण का केंद्र बन गया है। घोड़े का नाम है शिवनादश् पंचकल्याण। इस घोड़े की कीमत करीब कीमत 2 करोड़ रुपए बताई जा रही है। घोड़े के मलिक ने जब घोड़े की डाइट का खर्च बताया तो सब दंग रह गए।

पुंगनूर प्रजाति की गाय आकर्षण का केंद्र:

पुष्कर पशु मेले में विलुप्त होती पुंगनूर प्रजाति की गाय आकर्षण का केंद्र बनी हुई है। जयपुर से आए अभिराम ब्रीडिंग फार्म के अभिनव तिवारी ने बताया कि पुंगनूर प्रजाति की गाय की हाइट 28 से 36 इंच होती है। एक गाय प्रतिदिन 3 किलो चारा खाती है और तीन से पांच लीटर प्रतिदिन दूध देती है। तिवारी ने यह भी बताया कि पुष्कर के अंतरराष्ट्रीय पशु मेले में इन गायों को बेचने के मकसद से नहीं बल्कि उनकी प्रजाति के संरक्षण के लिए उनकी प्रदर्शनी लगाई गई है।

सतोलिया का पारंपरिक मैच खेला गया

मेला मैदान में देशी विदेशी पुरुषों के बीच राजस्थान का पारंपरिक सतोलिया मैच खेला गया। मैच शुरू करने से पहले राजस्थानी खेल से अनभिज्ञ मेहमान प्रतियोगियों को आयोजकों ने खेल के नियम की जानकारी दी। रोचक मुकाबले को देखने दर्शक उमड़ पड़े।

गीली डंडा का आयोजन

सतोलिया मैच के बाद विदेशी व देशी पर्यटकों के बीच गीली डंडा प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। जिसमें दस दस प्रतिभागियों की दो टीम बनाई गई।

लंगड़ी रेस में दौड़ी देशी व विदेशी युवतियां

मेले के दूसरे दिन रविवार को मेले मैदान में देशी विदेशी युवतियों के बीच लंगड़ी टांग प्रतियोगिता आयोजित की गई। रेतीले धोरों में एक टांग पर दौड की रोचक प्रतियोगिता में कुल 20 प्रतिभागियों ने भाग लिया।

ऊंट नृत्य प्रतियोगिता को देखने विदेशी सैलानी उमड़े

पुष्कर मेले मैदान में पशुपालन विभाग द्वारा रविवार को आयोजित ऊंट नृत्य व श्रृंगार प्रतियोगिता में देशी पर्यटकों के साथ साथ विदेशी सैलानियों ने जमकर लुफ्त उठाया। आकषर्क श्रृंगार से सजे धजे ऊंटों के नृत्य को कैमरे में कैद करने देशी विदेशी सैलानियों का हुजूम उमड़ पड़ा।

राशिफल

पंडित अनिल शर्मा

सोमवार 11 नवम्बर, 2024

कार्तिक मास, शुक्ल पक्ष, दशमी तिथि, सोमवार, विक्रम संवत 2081, शतभिक्षा नक्षत्र प्रात: 9:40 तक, व्याघात योग रात्रि 10:36 तक, तैतिल करण प्रात: 7:54 तक, चन्द्रमा आज रात्रि 2:22 से मीन राशि में संचार करेगा।

ग्रह स्थिति: सूर्य-तुला, चन्द्रमा-कुम्भ, मंगल-कर्क, बुध-वृश्चिक, गुरू-वृष, शुक्र-धनु, शनि-कुम्भ, राहु-मीन, केतु-कन्या।

आज रवियोग सम्पूर्ण दिन-रात रहेगा। कुमार योग प्रात: 9:40 से आरम्भ होगा। आज से भीष्म पंचक व्रत आरम्भ होंगे। आज पंचक है।

श्रेष्ठ चौघडिया: अमृत सूर्योदय से 8:08 तक, शुभ 9:24 से 10:50 तक, चर 1:32 से 2:52 तक, लाभ-अमृत 2:52 से सूर्यास्त तक।

राहुकाल: 7:30 से 9:00 तक, सूर्योदय-6:48, सूर्यास्त-5:34

मेष
आर्थिक/वित्तिय मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा। आय में वृद्धि होगी। संभावित स्त्रोत से धन प्राप्त होगा। घर-परिवार में सुख-सुविधाएं बढ़ेगी।

वृष
व्यावसायिक कार्यों में व्यस्तता अभी बनी रहेगी। महत्वपूर्ण कार्य योजना का क्रियान्वयन होगा। चलते कार्यों में प्रगति होगी। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

मिथुन
परिवार में शुभ-मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। शुभ कार्य के लिए यात्रा संभव है। परिवार में चल रहे आपसी मतभेद समाप्त होंगे। व्यावसायिक यात्रा संभव है।

कर्क
चन्द्रमा अष्टम भाव में शुभ नहीं है। शुभ कार्यों में व्